सुधा ओम ढींगरा

अमेरिका में भारतीयता की पर्याय श्रीमती सरोज शर्मा

अपने देश, अपनी धरती, अपनी संस्कृति और सभ्यता के बीच अपने ही जीवन मूल्यों को पहनना-ओढ़ना कोई बहुत बड़ी उपलब्धि नहीं है। विदेश में भारतीयता का झंडा फहराना एक चुनौती है। पाठकों! आज मैं आपको जिस व्यक्तित्व से मिलवा रही हूँ वे साहित्यकार नहीं हैं, उनकी प्रकाशित कृतियां नहीं हैं। वे कविता, कहानी की सृजना भी नहीं करती हैं, पर वे सृजनात्मक प्रतिभाओं की प्रेरणा स्रोत हैं। विदेशों में हिन्दी भाषा, साहित्य और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में इनका बहुत योगदान हैं । नाम है श्रीमती सरोज शर्मा। आप का जीवन, जीवन से जुड़े सब अध्याय अपने आप में साहित्य हैं। चटख शोख रंग की साड़ी और उससे मिलती-जुलती रंगों की चूड़ियाँ पहनें, माथे पर बड़ी-सी बिंदी लगाए, सजी-धजी श्रीमती सरोज शर्मा से बातचीत करने जब मैं उनके घर पहुँची तो ऐसा लगा कि मैं अमेरिका में किसी महिला से नहीं भारत में ही यू.पी. की किसी महिला से मिल रही हूँ। हँसते हुए वे बोलीं - ''मैं यू.पी.की ही हूँ। मुझे ऐसा लगा जैसे उन्होंने मेरे मन के भाव पकड़ लिए। मैं मुस्करा दी...। कानपुर के व्याकरणाचार्य स्वर्गीय पंडित बैंकुण्ठ नाथ जी की पुत्री हूँ। इससे पहले कि तुम प्रश्नों की बौछार करो मैं अपने बारे में बता दूँ कि मेरे पाँच बच्चे हैं और पाँचों ने ही भारतीय लड़के-लड़कियों से शादी की हैं। मेरी नातिन की भी भारतीय लड़के से ही शादी हुई हैं। मेरी और मेरे पति की वर्षों की मेहनत का परिणाम हैं कि हमारे बच्चे अमेरिका में भी हिन्दी बोलते हैं, धार्मिक हैं और इकट्ठे मिल कर चलते हैं, यानि की आपसी तालमेल बहुत अच्छा हैं।''

ट्राईएंगल एरिया (नॉर्थ कैरोलाईना) में आप ने हिन्दू भवन (मंदिर) और सांस्कृतिक सभागार बनवाया। इसके पीछे क्या कारण रहे कि आप ने इस काम का बीड़ा उठाया?

''सुधा, पचास साल पहले जब मैं नई-नई भारत से कैनेडा आई थी, तो एक पारिवारिक मित्र डॉ. निगम के यहाँ मुझे जाना पड़ा। उनके तीसरा बच्चा पैदा हुआ था और मैं उनकी सहायता करने के लिए उनके घर गई थी। उनके पाँच और सात वर्ष के दो बड़े नटखट बच्चे थे। मैं रोज दिनचर्या अनुसार पूजा करने बैठी तो दोनों बच्चे भी साथ आ बैठे। मैं पूजा के लिए कुछ तस्वीरें साथ रखती थी। हनुमान जी की तस्वीर देख कर वे बच्चे कहने लगे ''आप बन्दर की पूजा क्यों करते हैं? ये भगवान नहीं, भगवान तो जीसिस क्राईस्ट हैं। यह बात मुझे आन्तरिक कष्ट पहुँचा गई। श्रीमती निगम ने इस बात पर तर्क दिया कि वे कान्वेंट की पढ़ी- लिखी हैं और पूजा-पाठ में विश्वास नहीं करतीं और धर्म-कर्म को रूढ़िवादी लोगों की सोच मानती हैं। घर आकर मैं सारी रात सो नहीं पाई। मैंने निर्णय लिया कि अब हम कहीं भी रहें, धर्म, संस्कृति और सभ्यता का प्रचार करती रहूँगी। कैनेडा से हम नाईजीरिया और फिर सूडान आ गए। मेरे पति डॉ. गंगाधर शर्मा यू. एन. ओ. में थे। मुस्लिम देश में भी भारतीयता को क़ायम रखा। नौकरी ने पूरी दुनिया घुमा दी पर मैंने अपने घर्म, कर्म और संस्कृति को नहीं छोड़ा।

वर्षों पहले एक बच्चे के कथन से जो आन्तरिक कष्ट मुझे हुआ था, वह हर नए स्थान पर भी मुझे तड़पाता रहा। पर मैं कुछ कर नहीं पाई। हमारा स्थाई ठिकाना कहीं हो नहीं रहा था। बस यही सोच सताती रही कि अगर माँ-बाप इसी तरह बच्चों के लिए उदासीन रहे तो विदेशों में हमारी भावी पीढ़ी का क्या होगा! भीतर एक लौ-सी जलती रही जो मुझे प्रेरित करती रही। अंत में ट्राईएंगल एरिया के राले शहर में आकर हम बस गए और यही मेरी कर्मभूमि बनी। मेरे सारे काम यहीं से शुरू हुए।

यह किस सन् की बात है?

सन् 1972 के आस-पास। तब तो यहाँ बहुत कम भारतीय थे। हाँ, गिने-चुने चालीस के करीब परिवार थे। मैं आप के पहले प्रश्न के उत्तर में कारण बता चुकी हूँ अब आगे की बात करती हूँ।

जी... जी बताइए ...

मैं और मेरे पति डॉ. गंगाधर शर्मा ने लोगों में भारतीयता के प्रति जागृती लाने के लिए घर -घर जा कर पूजा शुरू की। 17 सितम्बर 1976 को मेरे ही घर में हिन्दू सोसाईटी की स्थापना हुई। पहले एक पुराना चर्च लेकर छोटे स्तर पर मंदिर शुरू किया गया। फिर 7 दिसम्बर, 1986 को हिन्दू सोसाईटी ने हिन्दू भवन (मंदिर) का निर्माण किया।

पर इसके लिए धन तो सब आप ने एकत्रित किया था...

पुकार मेरी थी, गुहार उसकी और संवाद जनता का था। सब ने मिल कर यह काम किया। सुधा अकेला तो वृक्ष भी मुरझा

जाता है। सब के साथ मिल कर चला जाए तो काम का रंग रूप निखर जाता है।

हिन्दू भवन में सब देवी–देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित हैं और यहाँ आर्य समाजी हवन भी होता है ...क्या यहाँ द्वैतवाद और अद्वैतवाद का झगड़ा नहीं होता

सुधा, झगड़े होते नहीं, किए या करवाए जाते हैं। यहाँ सब अपनी–अपनी पूजा करते हैं। कोई किसी का विरोधक नहीं सब एक दूसरे के प्रशंसक हैं। कोई प्रतिस्पर्द्धा नहीं। मैंने जब इस भवन के निर्माण का सोचा था तो विचार बड़े स्पष्ट थे कि इसमें सब देवी–देवताओं की मूर्तियाँ स्थापित होंगी और बाकायदा लोकतान्त्रिक तरीके से लोगों के वोट लिए गए थे कि किस देवी–देवता की मूर्ति कहाँ रखनी है। हिन्दू भवन के प्रांगण में साधु, संत, महात्माओं के प्रवचनों के साथ–साथ कवि सम्मेलन भी होते थे। भारतीय समुदाय जब यहाँ बहुत बढ़ गया तो हिन्दू भवन को सिर्फ पूजा–पाठ, प्रवचनों और धार्मिक अनुष्ठानों के लिए रहने दिया और भवन के साथ ही सांस्कृतिक सभागार की स्थापना की गई। जिसमें सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं। इस सभागार में कई कमरे हैं जिनमें हिन्दी, मराठी, गुजराती, तमिल, तेलुगु कई भारतीय भाषाएँ पढ़ाई जाती हैं।

सरोज जी, मैंने अमेरिका की युवा पीढ़ी में हिन्दी और बिंदी के प्रति आकर्षण देखा है पर भारत में युवा पीढ़ी इससे दूर हो रही है। वह इसे परम्परावादी, रुढ़िवादी और दकियानूसी मानती है। बिंदी लगा कर हिन्दी में बात करना स्तर से निम्न समझा जाता है। आप हर वर्ष भारत जातीं हैं और परिवर्तन देखती हैं, क्या सोचती हैं इसके बारे में।

अफ़सोस की बात है सुधा, भारत में पश्चिम का अँधाधुंध अनुकरण करते हुए वे अपनी संस्कृति, अपने दर्शन को ही भूलते जा रहे हैं। इसके लिए मैं टी. वी., फिल्में और माँ–बाप को दोषी ठहराती हूँ जो भौतिकवादी दौड़ में अपना ही संतुलन खो बैठे हैं। अमेरिका में भारतीय मूल की युवा पीढ़ी के पास दो देशों की अच्छाइयाँ हैं, अतः वे संतुलित हो चुकी हैं जिसे कभी 'अमेरिकेन बोर्न कन्फ्यूज़ड देसी' (ए.बी.सी.डी) कहा जाता था। पर आज भारत की युवा पीढ़ी कन्फ्यूज़ड है, न वह पूरी तरह भारतीय है और न ही वह पूरी तरह पश्चिमी।

सामाजिक एक्टिविस्ट, भारतीयता की प्रणेता होने के नाते आप की नज़रों में इस समस्या का क्या हल है?

वे हँस कर बोलीं...भारत को पश्चिम की नक़ल की आदत पड़ गई है। अब जब पश्चिम से पूर्वी सभ्यता जाएगी तो भारत उसी की नकल करेगा। हम ही अपनी भारतीयता को भारत में ले जाएँगे । यह है तो दुःख की बात और मेरे इस कथन पर हैरान होना भी स्वाभाविक है। परन्तु इतिहास साक्षी है कि सदियों से ऐसा ही हो रहा है।

आज स्त्री विमर्श और नारी आन्दोलन बहुत चर्चा में हैं, आप एक सामाजिक एक्टिविस्ट हैं। पारिवारिक, वैवाहिक स्तर पर और अमेरिका में युवा वर्ग की समस्याओं को लेकर आपने सैंकड़ों परिवारों का जीवन सुखमय किया है। नारी की आज़ादी को आप किस तरह से देखतीं हैं?

सुधा, हमारे यहाँ नारी को शक्ति समझा जाता है। देवी शक्ति। फिर नारी स्वयं की शक्ति को क्यों नहीं पहचानती। वह पुरुष के लिए भोग की वस्तु बन कर क्यों रहना चाहती है। वह अपने अन्दर के आत्मविश्वास को जगाए और शोषण के विरुद्ध खड़ी हो। स्त्री विमर्श और नारी आन्दोलन भी तभी सफल होंगें यदि औरत अपने लिए स्वयं खड़ी होगी। अगर भ्रूण हत्या होती रहेगी तो लड़कियों की संख्या कम हो जायेगी। प्रकृति का संतुलन बिगड़ जायेगा। महिला ही अपनी जात की रक्षा कर सकती है। पुरुष–प्रधान समाज में, नारी के अपने आत्मविश्वास के लिए और स्वयं को सुरक्षित महसूस करने के लिए स्त्री विमर्श और नारी आन्दोलन बहुत ज़रूरी हैं। आन्दोलन उसकी सहायता ही करते हैं। ऐसा मैं सोचती हूँ।

आप हिन्दू सोसाईटी की दस बार अध्यक्ष रहीं हैं और अब आप उसके न्यास मंडल में हैं फिर आप के पति डॉ. गंगाधर शर्मा ने हिन्दी विकास मंडल की स्थापना क्यों की?

सुधा, मुझे बार–बार अध्यक्ष इसीलिए चुना जाता है कि जो स्वप्न मैंने देखा था और उसे साकार करने के लिए मेरा ही विज़न और कार्यप्रणाली चाहिए थी। फिर कई वर्ष मुझे अध्यक्ष चुनते रहे कि बच्चा संभला रहे। हिन्दू सोसाईटी मेरे बच्चे की तरह है। मैंने ही तो इसे जन्म देने की प्रसव पीड़ा सही है। हाँ, हिन्दू सोसाईटी से कई काम हम नहीं कर सकते थे। जैसे हिन्दी भाषा और साहित्य का प्रचार–प्रसार। हिन्दी विकास मंडल के द्वारा हम अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी समिति के साथ मिल कर कवि सम्मेलन, कवि गोष्ठियाँ करते हैं। पंद्रह अगस्त, दशहरा और रामलीला के लिए तो बच्चे इंतज़ार करते हैं। नव लेखकों को प्रोत्साहित करते हैं। उन्हें मंच प्रदान करते हैं। मैं साहित्यकार नहीं हूँ पर साहित्य मेरे अंग–संग बसता है।

(पाठकों ! श्रीमती सरोज शर्मा इस समय अस्सी वर्ष की हैं और कार स्वयं ड्राईव करके हरेक के दुःख– सुख में पहुंचतीं हैं। उनकी ऊर्जा तो युवा वर्ग के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है)